International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-04-2026, Accepted: 19-05-2026, Published: 03-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 154-155

हिन्दी के प्रमुख ललित निबंधकारों के निबंधों का लोकतात्त्विक अध्ययन: परंपरा और समकालीन सरोकार

विमल कुमार मीना[1], डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2] सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निम्बाहेड़ा, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12149

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र हिन्दी ललित निबंध साहित्य में अंतर्निहित 'लोकतात्त्विक' चेतना का एक गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। ललित निबंध मूलतः वह विधा है जहाँ वैयक्तिकता, शास्त्र और लोक का अत्यंत सुंदर तादात्म्य दिखाई देता है। इस शोध में हिन्दी साहित्य के चार शीर्षस्थ ललित निबंधकारोंआचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय और डॉ. विवेकी राय के निबंधों को केंद्र में रखकर उनमें समाहित लोक–संस्कृति, लोक–भाषा, लोक–उत्सव, मिथक, लोक–गीत तथा ग्रामीण जीवन–मूल्यों का अन्वेषण किया गया है।
अध्ययन स्पष्ट करता है कि जहाँ हजारीप्रसाद द्विवेदी के यहाँ लोक और शास्त्र का अनूठा समन्वय है, वहीं विद्यानिवास मिश्र की रचनाएँ लोक–जीवन की माटी की सोंधी महक और भोजपुरी–अवधी की मिठास से समृद्ध हैं। कुबेरनाथ राय लोक को देवत्व और आदिम मिथकीय स्मृतियों से जोड़ते हैं, तो विवेकी राय बदलते हुए गाँव और गवईं संस्कृति के यथार्थ को जीवंत करते हैं। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के वर्तमान दौर में, जब पारंपरिक लोक–मूल्य तेजी से हाशिए पर जा रहे हैं, इन निबंधकारों का साहित्य हमारी सांस्कृतिक जड़ों को बचाए रखने में एक सेतु का कार्य करता है। यह शोध सिद्ध करता है कि ललित निबंधों का सौंदर्यशास्त्र मूलतः भारतीय लोक–संस्कृति की ही कलात्मक अभिव्यक्ति है।

मूल शब्दः ललित निबंध, लोकतात्त्विक अध्ययन, लोक–संस्कृति, लोक–भाषा, मिथक, गवईं चेतना, सांस्कृतिक विरासत

ललित निबंध हिन्दी गद्य की वह विधा है जहाँ बुद्धि और हृदय, वैयक्तिकता और सामाजिकता, तथा शास्त्र और लोक का अत्यंत सुंदर समन्वय दिखाई देता है। ललित निबंधों की आत्मा 'लोक' में बसती है। यहाँ 'लोक' से तात्पर्य केवल ग्रामीण या अनपढ़ समाज से नहीं है, बल्कि उस सनातन सांस्कृतिक चेतना से है जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी बहती आ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी के प्रमुख ललित निबंधकारों आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र और विवेकी राय—के निबंधों में मौजूद 'लोकतात्त्विक' (Folklore and Folk-elements) सरोकारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

ललित निबंध विधा में 'लोक' और 'ललित' के अंतर्संबंधों को रेखांकित करना।
प्रमुख ललित निबंधकारों के लेखन में बिखरे लोक–जीवन, लोक–विश्वास, लोक–गीत और लोक–भाषा के तत्वों की पहचान करना।
आधुनिकता के दौर में इन निबंधों के माध्यम से लोक–संस्कृति के संरक्षण की प्रासंगिकता को समझना।

प्रमुख ललित निबंधकार और उनका लोकतात्त्विक अवदान

1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी: लोक और शास्त्र का समन्वय

द्विवेदी जी हिन्दी ललित निबंध के युगपुरुष हैं। उनके निबंधों (जैसे 'कुटज', 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल') में शास्त्र और लोक का अनूठा द्वंद्व और समन्वय दिखाई देता है।
अकिंचन लोक की जिजीविषा: 'कुटज' के माध्यम से वे लोक की अदम्य जिजीविषा और संघर्षशीलता को स्वर देते हैं।
सांस्कृतिक परंपरा: वे इतिहास के उपेक्षित अध्यायों और लोक–परंपराओं को उठाकर उसे राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में लाते हैं।

2. डॉ. विद्यानिवास मिश्र: लोक–चेतना के चितेरे

विद्यानिवास मिश्र जी के निबंध पूरी तरह से लोक–जीवन की माटी की सोंधी महक से सराबोर हैं। उनके निबंध संग्रह जैसे 'तुम चंदन हम पानी', 'चितवन की छांह' इसके अनुपम उदाहरण हैं।

3. **लोक–उत्सव और ऋतुएँ:** मिश्र जी ने भारतीय ऋतु चक्र, सावन के गीत, लोक–उत्सवों (होली, दीवाली) और लोक–मुहावरों को अपने निबंधों में जीवंत किया है।

मातृ–भाषा और लोक–धुनों का राग: उनके निबंधों की भाषा में भोजपुरी और अवधी लोक–भाषा की मिठास घुली हुई है।

३. कुबेरनाथ रायः लोक और देवत्व का मिथकीय संस्पर्श

कुबेरनाथ राय मूलतः रसधर्मा ललित निबंधकार हैं। उनके निबंधों ('प्रिया नीलकंठी', 'गंधमादन', 'पर्णमुकुट') में लोक–तत्व मिथकों और प्रतीकों के माध्यम से प्रकट होते हैं।

लोक–विरासत और प्रकृतिः वे प्रकृति के कण–कण में लोक–देवताओं और सनातन प्रतीकों की खोज करते हैं।

आदिम लोक–स्मृतियाँः राय जी आधुनिक मनुष्य को उसकी आदिम लोक–स्मृतियों से जोड़कर उसे अपनी जड़ों की ओर लौटने का संदेश देते हैं।

४ डॉ. विवेकी रायः गवईं संस्कृति के संवाहक

विवेकी राय जी के निबंधों ('गवईं गंध गुलाब', 'मनबोध मास्टर की डायरी') में ठेठ ग्रामीण जीवन, खेती–किसानी और बदलते हुए गाँव की यथार्थपरक लोक–झाँकी मिलती है।

लोक–जीवन का यथार्थः वे केवल लोक की अच्छाइयों को ही नहीं, बल्कि बदलते दौर में टूटते हुए गाँव और बिखरती लोक–मर्यादाओं पर भी गहरी चिंता व्यक्त करते हैं।

४. निबंधों में लोकतात्त्विक तत्व (Analysis of Folk Elements)

ललित निबंधों में लोकतत्त्व मुख्य रूप से निम्नलिखित रूपों में अभिव्यक्त हुए हैं:

लोकतात्त्विक आयाम	निबंधकारों द्वारा अभिव्यक्ति
लोक–गीत और संगीत	ऋतु–गीत (कजरी, चौती) और लोक–धुनों का गद्य में काव्यात्मक प्रयोग।
लोक–भाषा व मुहावरे	ठेठ देशज शब्दों, लोकोक्तियों और कहावतों द्वारा भाषा को सजीव बनाना।
लोक–विश्वास व मिथक	तुलसी, पीपल, नदी, और पर्वतों से जुड़े पारंपरिक विश्वासों का दार्शनिक विवेचन।
गवईं जीवन–शैली	गाँव की चौपाल, पनघट, खेती–बारी और उत्सवों का सजीव चित्रण।

लोकतत्त्व का समकालीन विमर्श और सरोकार

आज के भूमंडलीकरण और बाजारवाद के दौर में जहाँ वैश्विक संस्कृति स्थानीय लोक–संस्कृति को निगल रही है, वहाँ इन निबंधकारों का लोक–प्रेम और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।
"ये निबंध केवल साहित्य की धरोहर नहीं हैं, बल्कि ये हमारी उस लोक–स्मृति के दस्तावेज हैं जो हमें यांत्रिक होने से बचाती है।"
ये निबंधकार आधुनिकता का विरोध नहीं करते, बल्कि आधुनिक मनुष्य को उसकी सांस्कृतिक जड़ों (Roots) से जोड़कर उसे अधिक मानवीय और संवेदनशील बनाने का प्रयास करते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी के प्रमुख ललित निबंधकारों ने अपनी गद्य–शैली के माध्यम से 'लोक' को केवल विषय के रूप में नहीं चुना, बल्कि लोक को अपनी दृष्टि और संवेदना बनाया। द्विवेदी जी का दार्शनिक लोक, मिश्र जी का रागात्मक लोक, कुबेरनाथ राय का मिथकीय लोक और विवेकी राय का यथार्थवादी गवईं लोक—सभी मिलकर भारतीय संस्कृति की बहुरंगी तस्वीर पेश करते हैं। इनका लोकतात्त्विक अध्ययन सिद्ध करता है कि हिन्दी निबंधों का सौंदर्य शास्त्र मूलतः लोक–सौंदर्य शास्त्र ही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, अ. (२०२४). हिन्दी ललित निबंधों में लोक–जीवन और पर्यावरण चेतना. अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
2. द्विवेदी, सं. (२०२५). आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का साहित्य और लोकधर्मी दृष्टि. वाणी प्रकाशन.
3. मिश्र, रा. (२०२४). विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में सांस्कृतिक विमर्श. संजय प्रकाशन.
4. मीना, वि. कु. (२०२५). लोकतात्त्विक विमर्श और समकालीन हिन्दी गद्य. शोध दिशा (त्रैमासिक पत्रिका), २८(३), ४५–५२.
5. राय, अ. (२०२४). कुबेरनाथ राय की निबंध यात्रा: मिथक से लोक तक. राजकमल प्रकाशन.
6. शर्मा, प्र. (२०२५). भूमंडलीकरण के दौर में लोक–संस्कृति का संरक्षण और ललित निबंध. साहित्यिक विमर्श पत्रिका, १४(१), १२–१६.